Vol. 9, Issue-2 (July 2020) pp. 44-49 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

सितार की उत्पत्ति एवं विकास: एक विश्लेषण

डॉ. मनोज कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर (सितार), संगीत भवन,
विश्व भारती विश्वविद्यालय, शान्तिनिकेतन
प. बंगाल
Email: sharmamadhusudhan@yahoo.com

सारांश

सितार भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण और अविभाज्य वाद्य यंत्र है. भारतीय संगीत को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित करने में सितार वाद्य ने अग्रणी भूमिका निभाई है. सितार को संगीत की संस्थागत शिक्षा में एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्थान प्राप्त है. किन्तु इसकी उत्पत्ति और विकास को लेकर विद्वानों में शुरुआत से ही मतभेद रहे है. प्रमाणिक साक्ष्यों के आभाव में कई मत- मतान्तर प्रचलित होते गए. प्रस्तुत शोध पत्र में सितार वाद्य की उत्पत्ति और उसके क्रमिक विकास को प्रमाणिक श्रोतों के आधार पर रेखांकित करने का प्रयास किया गया है.

मुख्य बिंदु: भारतीय संगीत, सितार, तंत्र वाद्य, उत्पत्ति

आधुनिक काल में सितार वाद्य अपनी मधुरता के कारण संगीतज्ञों के अतिरिक्त जनमानस में भी एक लोक प्रिय वाद्य के रूप में स्थापित हो चुका है. भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रचलित लोकप्रिय वाद्यों में सितार का स्थान सर्वोपरि है. अपनी विकसित वादन शैली के कारण सितार वाद्य भारत में ही नही वरन पुरे विश्व में अपना गौरव पूर्ण स्थान बना लिया है. भारतीय संगीत का, विदेशो में प्रचार प्रसार करने का बहुत कुछ श्रेय, सितार को भी जाता है. किन्तु इस मधुर लोकप्रिय वाद्य के उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों में कई मतभेद रहे है. सितार वाद्य की उत्पत्ति कब, कैसे और कहाँ हुई यह पिछले कई दशको से संगीत जगत में शोध का विषय रहा है.

मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ भारतीय संगीत का विकास भी होता रहा है. अगर सौ वर्ष पहले का संगीत सुने तथा आज का संगीत सुने तो उसमे बहुत से परिवर्तन देखने को मिलते है, जो प्रकृति के नियमानुसार उचित है क्योंकि परिवर्तन ही प्रकृति का स्वभाव है. इसी प्रकार भारतीय शास्त्रीय संगीत के वाद्यों में भी एक अंतराल के बाद परिवर्तन होते चले गए तथा आज किसी भी वाद्य का वह स्वरुप नही है जो लगभग सौ वर्ष पहले या उससे भी पहले था. प्राप्त तथ्यों के आधार पर ये अनुमान लगा सकते है कि हजारों वर्ष पहले सभी वाद्य का स्वरुप वर्तमान समय से भिन्न रहा है.

वाद्य विभाजन के दृष्टि से सितार को तंत्र वाद्यों के श्रेणी में रखा गया है तथा तंत्री वाद्यों का उल्लेख तो वैदिक काल से ही प्राप्त होता है, और इसके विभिन्न नाम भी प्राप्त होते है जो इस प्रकार से है –

ऋग्वेद – घाटिलका (आघाटी), कांडवीणा, भुमिदुन्दुभी, कर्करी, गर्गर आदि .
यजुर्वेद – वीणा, वाण, तुणव इत्यादि .
सामवेद – अघाटा, कर्करी, दुन्दुभी इत्यादि .
अथर्ववेद – गात्र वीणा , महती वीणा, कात्यायनी वीणा, रावणी वीणा, कच्छपीवीणा, कांड वीणा, कर्करी, वाण इत्यादि.
इसी प्रकार वैदिक काल से लेकर रामायण काल, महाभारत काल, पाणिनि काल, बौद्ध काल, जैन युग इत्यादि विभिन्न कालो में अनेक प्रकार के वाद्यों का उल्लेख प्राप्त होता है. समय के साथ- साथ भारतीय संगीत के सभी प्रकार के वाद्यों में नामो के साथ साथ स्वरूपों में भी बहुत परिवर्तन हुए है. वर्तमान समय के सभी तंत्री वाद्य वीणा के प्रकारों में से आते है,जिसका प्रमाण प्राप्त होता है.

तंत्री वाद्य की परिभाषा:

सबसे पहले जानते है कि वाद्य क्या है. डा. प्रेमलता शर्मा के अनुसार - 'वाद्य' शब्द 'वद्' धातु से बना है और इसका अर्थ है ''जिससे बुलवाया जा सके'' अर्थात् मनुष्य स्वयं अपने शरीर से नाद उत्पन्न न करके जिस यंत्र में से नाद उत्पन्न कर सकता है, यानि जिसे बुलवा सकता है, वह है -'वाद्य'[1]. तंत्री वाद्य के सम्बन्ध में देखें तो 'तंत्री वाद्य' शब्द तंत्री + वाद्य से मिलकर बना है "वादयितुं योग्यं वाद्यं" इस व्युत्पत्ति के आधार पर वाद्य शब्द का शाब्दिक अर्थ "वादनीय" होता है अर्थात वह यंत्र विशेष जो बजने योग्य हो. वद का अर्थ बोलना या स्वर को अभिव्यक्त करना है अर्थात जो बोलता है वही वाद्य है" इस आधार पर कह सकते है कि वाद्य का अर्थ वह यंत्र है जिसके द्वारा बोला जाता है या स्वर अभिव्यक्त किया जाता है. वाद्य शब्द का पर्याय "वादित्र" और आतोद्य भी होता है. नाट्यशास्त्र में तत को "तंत्रीकृत" कहा गया है इस प्रकार तनु धातु से क्त प्रत्यय लगा कर "तत म" शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है जो व्याप्त और विस्तृत हो, जिसमे स्वर व्याप्त हो और जिसका विस्तार किया जा सकता हो.

सितार का अर्थ – श्री जगदीश नारायण पाठक के अनुसार – सितार यह "स" बंधते धातु से बना है | इसमे तीन शब्दों का योग है सित + आ + र इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है सित = बन्धन्य, आ = सामतंत्र, र = रंजयति इति सितार अर्थात जो सब ओर से आनंदित करता है वह वाद्य सितार है. इस अर्थ के आधार पर सितार का नाम सार्थक होता है क्योंकि सितार में तारो का बंधन, मिजराफ का बंधन, गतों का बंधन, इस प्रकार यह बंधनमय वाद्य है. यदि इनमे से किसी भी बंधन का उलंघन किया जाये तो सितार द्वारा रंजकता उत्पन्न हो ही नहीं सकती. यहाँ तक कि इसमें बैठक का भी बंधन है.[2]

वर्तमान समय में इसकी उतपत्ति के विषय में अनेक मत पाये जाते है, जो निम्नलिखित है-

[1] द्रष्टव्य – अंतर्मन का संगीत, पृ. 58

[2] सितार सिद्धांत भाग -1 श्री जगदीश नारायण पाठक पृ० 8, दृष्टव्य भारतीय संगीत के तंत्री वाद्य- श्री प्रकाश महादिग पृ० 85

सितार की उत्पत्ति समुद्रगुप्त काल में हुई इस मत का उल्लेख श्री उमेश जोशी अपनी पुस्तक "भारतीय संगीत का इतिहास" में किया है किन्तु यह मत अधिक उचित नहीं प्रतीत होता.[3] यद्यपि गुप्तकाल को भारतीय संस्कृति का स्वर्णयुग कहा जाता है. गुप्तकाल दूसरी से पांचवी सदी तक माना जाता है तथा नाट्यशास्त्र भी इसी काल में लिखा गया माना जाता है. इस काल में लगभग 60 प्रकार के वाद्यों का वर्णन प्राप्त होता है किन्तु इनमें सितार वाद्य का उल्लेख या स्वरुप नहीं प्राप्त होता है. आठवी शताब्दी में मतंग कृत ब्रह्देशी में भी वीणा का प्रचार तो था किन्तु सितार का उल्लेख यहाँ भी प्राप्त नही होता है.[4] श्री प्रज्ञानंदस्वामी तथा श्री जगदीश नारायण पाठक के अनुसार "आधुनिक सात तार वाला सितार प्राचीन चित्रा वीणा का ही परिवर्तन रूप है." इन विद्वानों के विचार केवल तारो के संख्या के आधार पर ही व्यक्त किये गए है क्योंकि परिवादिनी और चित्रा वीणा में सात तार लगाये जाते थे और सितार में भी सात तार लगाये जाते है और कुछ लोग छ तार प्रयुक्त करते है तथापि केवल तारो की संख्या के आधार पर ही इन वीणाओं द्वारा सितार की उत्पत्ति मानना तर्कसंगत नही होगा.[5]

श्री एस० एम० टैगोर ने यंत्र क्षेत्र दीपिका (1880) में लिखा है कि सितार का प्राचीन नाम त्रितंत्री वीणा था. तीन तारों से युक्त यंत्र को संस्कृत भाषा में त्रितंत्री कहते है. वास्तव में इस यंत्र में तीन ही तार थे. अभी भी पश्चिम देशो में यदा कदा तीन तार देखे जाते है. फारस के सितार और संस्कृत के सितार त्रितंत्री का शाब्दिक अर्थ एक है किन्तु आकार में एक से दिखाई नहीं देते है. संस्कृत के ग्रन्थकारों ने वीणा में बहुत से तार दर्शाए गए है, उसमे त्रितंत्री भी एक है. इस आधार पर सितार को त्रितंत्री का रूप माना जाता है.

इसी प्रकार का विचार डॉ. लालमणि मिश्रा जी ने भी व्यक्त किया है. आप के अनुसार शारंगदेव के समय तक जो वीणा त्रितंत्री के नाम से प्रचलित थी उसी ने आगे चलकर सितार और तम्बूरा का रूप एवं नाम धारण कर लिया.[6]

अबुल फज़ल ने भी आईने अकबरी (1590 ई.) में वाद्ययंत्रों का वर्णन किया है. अतः कुम्भा वर्णित त्रितंत्री वीणा से और अबुल फजल वर्णित यंत्र में अंतर परिलक्षित होता है. इस प्रकार त्रितंत्री वीणा का सितार के साथ कोई सीधा सम्बन्ध स्थापित नही होता है. दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि त्रितंत्री वीणा में पर्दे नही लगे होते थे. अतः इन सभी तथ्यों के आधार पर यही मानना उचित है कि सितार के उत्पत्ति का संबध सीधे रूप से त्रितंत्री वीणा के साथ स्थापित नही किया जा सकता है.[7]

[3] भारतीय संगीत का इतिहास - उमेश जोशी, पृ० 144 -145
[4]भारतीय संगीत के तंत्री वाद्य - प्रकाश महाडिग, पृ० 81
[5] वही, पृ० 8
[6]भारतीय संगीत वाद्य - लाल मणि मिश्रा, पृ० 43
[7] भारतीय तंत्री वाद्यों का इतिहास प्रकाश महाडीग प० स० 82

जंत्र से सितार –जंत्र शब्द का प्रचार संगीत रत्नाकर पर कल्लिनाथ के टीका से प्रारम्भ होता है क्योकि आपने ही अपने टीका में त्रितंत्री को जंत्र का उल्लेख किया है. बाद में यही जंत्र शब्द अपभ्रंश होने के कारण आईने अकबरी में यंत्र के नाम से आया है. जंत्र तथा यंत्र ये दोनों शब्द भक्ति कालीन युग के कवियों के काव्य में भी पाये जाते है, किन्तु जर्नल कैरेट के अनुसार यंत्र शब्द एक सामूहिक शब्द है. जिस प्रकार प्राचीन काल में सभी तंत्री वाद्यों को वीणा कहते थे. उसी प्रकार अकबर काल में सभी वाद्य यंत्रो को जंत्र कहा जाता था, जो बाद में यंत्र कहा जाने लगा और आज भी बंगला भाषी जंत्र शब्द का प्रयोग करते है. इससे यह ज्ञात होता है कि त्रितंत्री वीणा से जंत्र का नाम नही पड़ा बल्कि यह उसका एक सामूहिक नाम था. जिससे यह स्पष्ट होता है कि त्रितंत्री वीणा का सितार के साथ या जंत्र का सितार के साथ कोई सम्बन्ध ज्ञात नहीं होता है.[8]

सितार एक विदेशी वाद्य – जो लोग इस मत को मानने वाले है वह यही तर्क देते है कि पश्चिमी देशो में यंत्र भाषा में सह का अर्थ तीन होता है इस प्रकार सह तार अर्थात तीन तार वाला वाद्य इनके अनुसार सितार के प्रारम्भ में तीन तार होते थे इसलिए यह एक विदेशी वाद्य है. कुर्ट शेख के अनुसार – पर्शियन लोग भी तारो की संख्या के आधार पर वाद्यों का नाम रखते थे.

किन्तु प्राचीन काल में हमारे यहाँ भी अनेक वीणाएं प्रचलित थी जिनके नाम उनमे प्रयुक्त होने वाले तारों की संख्या के अनुसार रखे गए जैसे एक तार वाले वाद्यों को एकतंत्री, दो तार वाले को नकुली, तीन तार वाले की त्रितंत्री वीणा इत्यादि. इसके अतिरिक्त किन्नरी में भी तीन तार लगे होते थे. इससे स्पस्ट है कि हमारे यहाँ भी वीणओं में तारो की संख्या में भिन्नता पाई जाती है.[9]

वैदिक काल से लेकर आज तक वाद्यों की बहुत बड़ी परम्परा रही है. इस लिए वाद्यों के नामो में समानता दिखाई भी दे तब भी इसके आधार से यह कहना ठीक नहीं है कि सितार विदेशी वाद्य है. आकार के दृष्टि से विचार करे तो देखते है की हमारे यहाँ के तथा विदेशी आदि वाद्यों में बहुत अंतर है

डा. लालमणि मिश्रा भारतीय तंत्री वाद्यों की मुख्य तीन विशेषता बताई है जो इस प्रकार है –

1. घुड़च का चपटा होना, घुड़च की जबारी द्वारा ध्वनि की गुंजन की व्यवस्था है. वह अन्य किसी किसी वाद्य में नही पाई जाती है. ये व्यवस्था केवल मिजराफ वाले वाद्य में होती है.
2. भारतीय वीणा में पर्दे लगाने की व्यवस्था है वैसे अन्य देशो में नही पाई जाती है.
3. चिकारी का प्रयोग.

[8] सितार विज्ञान शास्त्र एवं प्रयोग – डॉ. राजेश शाह, प्र. 51
[9] भारतीय संगीत के तंत्री वाद्य – प्रकाश महादिग, पृ० 82

चिकारी का प्रयोग किन्नरी वीणा के उत्तपत्ति काल से ही प्रयोग होने लगा था, जो 12वी , 13वी शताब्दी तक परिपुष्ट हो गया था.

इन विशेषताओं के अतिरिक्त एक अन्य विशेषता आती है कि भारतीय वाद्यों का तुम्बा एक विशेष प्रकार का अंडाकार का आकर लिए हुए होता है जो विदेशी वाद्यों में दिखाई नहीं देते है. इस कसौटी पर जब हम सितार का परिक्षण करते है तब सितार का तुम्बा भी एक विशेष प्रकार का आकर लिए होता है. इससे यह सिद्ध होता है की सितार एक भारतीय वाद्य है.[10]

सितार के अविष्कारक अमीर ख़ुसरो- भारत में सितार की उत्पत्ति के विषय में जनसाधारण की यह धारणा है कि इसकी उत्पत्ति अमीर खुसरो ने की है किन्तु यह बात सत्य प्रतीत नही होती, क्योंकि अगर सितार की उत्पत्ति अमीर खुसरो ने की होती तो वो स्वयं अपने ग्रंथो में सितार वाद्य का उल्लेख अवश्य करता. यहाँ तक की उनके काल के प्रसिद्ध इतिहासकार बर्नी ने भी उस समय के दरबारी संगीत का वर्णन तथा कई कलाकारों, वाद्यों का उल्लेख तो किया किन्तु सारे वर्णन में सितार वाद्य कही नहीं पाया गया. उसके बाद की प्रसिद्ध पुस्तक आईने-ए-अकबरी में भी सितार वाद्य का कोई प्रमाण नही मिलता. अतः यह स्पष्ट होता है कि अमीर खुसरो ने और न ही उसके काल में ही सितार का अविष्कार हुआ था.[11]

सितार के अविष्कारक खुसरो खां – कुछ विद्वानों का मत है कि सितार का अविष्कार खुसरो खां ने किया. श्रीमती सुलोचना ब्रहस्पति के अनुसार – वर्तमान सितार का अविष्कार नेमत खां (सदारंग) के छोटे भाई खुसरो खां ने किया, जो फ़िरोज़ खां अदारंग के पिता थे. श्री रमा वल्लभ मिश्रा के अनुसार नवाब बुली खां की लिखी पोथी मिराते दिल्ली में उन्होंने स्वयं इन शब्दों में लिखा है कि नेमत खां सदारंग का भाई खुसरो खां संगीत का उद्भट विद्वान है. उसने एक तीन तार का एक नया बाजा बनाया है, जिस पर वो नई नई राग रागिनिया कुशलता से बजाता है. श्री रमा वल्लभ मिश्रा का एक तर्क यह है कि खुसरो खां ने सितार का अविष्कार करने की योग्यता थी, क्योंकि खुसरो खां देश के श्रेष्ठतम वीणा वादकों के वंशज थे.[12]

तम्बूर से सितार – तम्बूरे का प्रचलन सर्वप्रथम कैकुबाद के राजकाल में मिलता है. उस युग में यात्रा के प्रत्येक पड़ाव में तथा संगीत गोष्ठी में अनेक वाद्य बजाते थे, जिसमे तम्बूरे भी बजाये जाते थे. इसके पश्चात मुहम्मद तुगलक, बादशाह अकबर तथा मुहम्मद शाह रंगीले के दरबार में भी तम्बूरे का उल्लेख प्राप्त होता है. इससे यह स्पष्ट होता है की इन कालो में तम्बूरा वादकों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था परन्तु इसकी संरचना के बारे में विस्तृत जानकारी किसी काल में

[10] भारतीय संगीत वाद्य – लाल मणि मिश्र, पृ० 55
[11] भारतीय संगीत के तंत्री वाद्य – प्रकाश महादिग, पृ० 87
[12] भारतीय तंत्री वाद्यों का इतिहास - प्रकाश महाडीग, पृ० स० 88

प्राप्त नहीं होती. वर्णन के रूप में केवल तुम्बा और तार का ही वर्णन पाया जाता है, जिससे तम्बूरा के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त नही होती. इसी काल खंड में प० अहोबल द्वारा रचित संगीत पारिजात (1560-1566) में तम्बूरा या तम्बूर के दो प्रकार, निबद्ध तथा अनिबद्ध बताये गए है. निबद्ध प्रकार में दण्ड पर तांत से बंधे पर्दे होना तथा चार तंत्रियो को दो अंगुलियों से वादन करने का विधान बताया गया है, लम्बाई रूद्र वीणा की भांति बताई गई है. इसी आधार पर महाराजा सवाई प्रताप सिंह देवकृत राधा गोविन्द संगीतसार (1779-1804 ई०) में निबद्ध तथा अनिबद्ध का वर्णन करते हुए ये कहा है कि इसका लौकिक नाम सितार है. इन तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि अनिबद्ध तानपुरा (आज के तानपुरा) तथा निबद्ध तम्बूरा (आज के सितार) के समान कोई वाद्य रहा होगा.[13]

निष्कर्ष:

संगीत के इतिहास का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि सितार की उत्पत्ति के विषय में अनेक विद्वानों के अनेक मतभेद प्राप्त होते है किन्तु एक बात तो निश्चित होता है कि सितार की उत्पत्ति किसी एक व्यक्ति के प्रयास का फल न होकर वरन एक समूह का है. सितार वीणा के ही एक प्रकार का परिवर्तित रूप है जो विभिन्न काल खण्ड में, विभिन्न रूपों में तथा विभिन्न नामों से होता हुआ वर्तमान काल में सितार के रूप में स्थापित हुआ है, परन्तु इतिहास और संगीतकारों के विचारों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि 19वी शताब्दी के बाद सितार वाद्य में बहुत परिवर्तन हुए है तथा वर्तमान काल में भी इसमें कई प्रकार के प्रयोग हो रहे है.

सन्दर्भ:

1. प्रकाश महादिग, *भारतीय संगीत के तंत्री वाद्य*, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, रविन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, भोपाल, प्रथम संस्करण 1994.
2. लाल मणि मिश्रा, *भारतीय संगीत वाद्य,* भारतीय ज्ञान पीठ नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973.
3. उमेश जोशी, *भारतीय संगीत का इतिहास*, मानसरोवर प्रकाशन फिरोजाबाद.
4. राजेश शाह, *सितार विज्ञान शास्त्र एवं प्रयोग*, कला प्रकाशन, न्यू साकेत कालोनी बी० एच० यू० वाराणसी, प्रथम संस्करण - 2013.
5. वर्मा, अमित कुमार, अंतर्मन का संगीत, कनिष्क पब्लिकेशन, 2012

[13] सितार विज्ञान शास्त्र एवं प्रयोग - राजेश शाह, पृ० 52